टेसू राजा बीच बज़ार

एकलव्य का प्रकाशन

निरंकारदेव सेवक

चित्रांकनः रानू टाइटस

टेसू राजा बीच बज़ार

निरंकारदेव सेवक

चित्रांकनः रानू टाइटस

एकलव्य का प्रकाशन

टेसू राजा बीच बज़ार

Tesu Raja Beech Bazaar

एक चित्र-कविता

निरंकारदेव सेवक

चित्रांकनः रानू टाइटस

संस्करणः अप्रैल 2008/3000 प्रतियाँ

पहला पुनर्मुद्रणः जून 2009/3000 प्रतियाँ

100 gsm मेपलिथो और 170 gsm आर्टकार्ड (कवर) पर प्रकाशित

ISBN: 978-81-89976-12-5

मूल्यः 38.00 रुपए

प्रकाशकः **एकलव्य**

ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी,

शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म. प्र.)

फोनः (0755) 255 0976, 2671017 फैक्सः (0755) 255 1108

www.eklavya.in

सम्पादकीयः books@eklavya.in

किताबें मँगवाने के लिएः pitara@eklavya.in

मुद्रकः बॉक्स कॉरोगेटर्स एंड ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल, फोनः (0755) 258 7551

लोकगीत और कथाएँ उस समय की स्मृति को बचाकर रखने में हमारी मदद करती हैं जब बच्चों और बड़ों के साहित्य में कोई अन्तर नहीं होता था। यह मात्र संयोग नहीं है कि पिछले कुछ समय से हिन्दी भाषा से ऐसे प्रकाशन का लोप होता जा रहा है।

छोटे बच्चों के लिए ऐसे गीत और कहानियाँ जिनमें सवाल-जवाब और दोहराव की शैली अपनाई गई हो बहुत रुचिकर होती हैं। शायद यह बात वयस्कों के लिए भी सही है – लेकिन बच्चों के लिए दोहराव और पुनरावृत्ति ढाढ़स बँधाने की भूमिका भी अदा करते हैं। आसपास की दुनिया में कुछ परिचित और आत्मीय संकेत रहें, यह बच्चों के लिए बहुत ज़रूरी है।

यह कविता, जो सवाल-जवाब की शैली में लिखी गई है और गणित के खेलों से भरी एक कहानी जैसी है, हमने निरंकारदेव सेवक की पुस्तक *टेसू के गीत* से ली है। पुस्तक के शुरू में सेवक जी हमें बताते हैं कि टेसू के गीत हमारे देश के बच्चे बहुत पुराने समय से गाते चले आए हैं। भारत के अलग-अलग भागों में टेसू को टेसू राजा, टेसू राय, टेसूरा या केसूरा भी कहते हैं। सेवक जी के अनुसार लोगों का कहना है कि टेसू चीन देश से महाभारत की लड़ाई के समय भारतवर्ष में आए थे। टेसू के गीतों में कुछ ऐसी बेतुकी और अजीब बातें रहती हैं जिन्हें सुनकर कोई भी हँसे बिना नहीं रह सकता।

इस किताब के चित्र हमने बहुत हिसाब से बनाए हैं। हर पन्ने पर बच्चों के गिनने के लिए चित्र में नमूने इत्यादि बनाए गए हैं – टेसू की पोशाक के फूल, कम्बल के खाने, भेड़ों की संख्या, हावड़ा ब्रिज पर खड़े कुत्ते, तार पर टँगे कपड़े। इन सबको बच्चे गिनते जाएँगे तो वे इस हिसाब को समझते जाएँगे। कम्बल के 52 खानों में कितनी मछलियाँ हैं, कितनी बकरियाँ, कितने अनार – हर बार किताब को देखते हुए वे कुछ अलग-अलग खेल खेलेंगे। चित्र में अगर सात पत्ते और सात ही भेड़ें बनी हैं, तो सहज ही यह चर्चा भी छिड़ सकती है कि पेड़ का बाकी हिस्सा कहाँ है, या कि झुण्ड की और भेड़ें कहाँ हैं। आप अन्य पुस्तकों के चित्रों से तुलना कर सकते हैं या फिर बच्चे खुद भी यह देख सकते हैं कि किसी दृश्य का एक ही हिस्सा जब चित्रित किया जाता है तो इसका अर्थ क्या है। परिप्रेक्ष्य की चर्चा खिड़की से दिखते हुए दृश्य, और बाहर निकलकर उसी दृश्य को देखने से जोड़ी जा सकती है।

लेकिन इस किताब का असली मज़ा तो यह भी है कि याद हो जाने पर इस कविता को कैसे ताली बजाकर, सुर में गाया जा सकता है। इस कविता को नाटक के रूप में पूरी कक्षा के बच्चे मिलकर खेल भी सकते हैं।

– तेजी ग्रोवर

टेसू राजा बीच बज़ार,

खड़े हुए ले रहे अनार।

कितने हैं कम्बल में खाने?

भेड़ भला क्यों लगी बताने।

एक झुण्ड में भेड़ें कितनी?

एक पेड़ पर पत्ती जितनी?

एक पेड़ पर कितने पत्ते?

जितने धोबी के घर लत्ते।

धोबी के घर लत्ते कितने?

कलकत्ते में कुत्ते जितने।

बीस लाख तेईस हज़ार

दाने वाला एक अनार।

टेसू राजा कहें पुकार,

लाओ मुझको दे दो चार।

टेसू राजा बीच बज़ार

टेसू राजा बीच बज़ार, खड़े हुए ले रहे अनार।
इस अनार में कितने दाने? जितने हों कम्बल में खाने।

कितने हैं कम्बल में खाने? भेड़ भला क्यों लगी बताने।
एक झुण्ड में भेड़ें कितनी? एक पेड़ पर पत्ती जितनी।

एक पेड़ पर कितने पत्ते? जितने धोबी के घर लत्ते।
धोबी के घर लत्ते कितने? कलकत्ते में कुत्ते जितने।

बीस लाख तेईस हज़ार दाने वाला एक अनार।
टेसू राजा कहें पुकार, लाओ मुझको दे दो चार।

— निरंकारदेव सेवक

9788189976125

एकलव्य

parag

मूल्यः 38.00 रुपए

A0103H